2
लेखाकंन मान्यताएँ
(Accounting Assumptions)

2.1 भूमिका

पिछले पाठ में आपने व्यवसायिक लेन देनों के लेखे करने के विषय में संक्षेप में पढ़ा। व्यवसायिक लेन-देनों का लेखा करते समय कुछ समस्याएं उत्पन्न होती है जैसे

(i) लेन देनों में से कौन-से लेखा करने योग्य है?

(ii) क्या स्वामी के व्यक्तिगत लेन-देनों का लेखा व्यावसायिक पुस्तकों में किया जाए?

(iii) व्यावसायिक परिणामों को कब प्रेषित किया जाये?

इन समस्याओं का समाधान विशेष मान्यताओं यानि वातावरण के विषय में मूलभूत मान्यताओं पर आधारित है। मान्यताएं या अवधारणायें खाते की पुस्तकों मे लेन-देनों के लेखा करने में सहायक होती हैं। ये लेखाकंन लेखे की आधारशिला हैं। इस पाठ में कुछ महत्त्वपूर्ण मान्यताओं पर प्रकाश डाला जायेगा।

2.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- 'लेखांकन मान्यताओं' की परिभाषा दे पायेगें;
- चार लेखाकंन मान्यताओ यानि व्यवसाय के अस्तित्व की, मुद्रा-मापन की, चालू व्यापार की, अवधि की मान्यताओं को गिना सकेगें
- उदाहरण सहित समझा पायेगें कि व्यवसाय एवं स्वामी दो अलग-अलग इकाइयाँ हैं;

- व्यापार के अस्तित्व की मान्यता का अभिप्राय तथा महत्व का अनुमान कर पायेगें;
- मुद्रा-मापन की मान्यता का अर्थ एवं महत्व की व्याख्या कर पायेगें;
- चालू व्यापार की मान्यता का अर्थ बता पायेगें;
- चालू व्यापार की मान्यता की आवश्यकता को पहचान सकेंगे;
- अवधि मान्यता का अर्थ एवं महत्व को उदाहरण सहित समझा पायेगें;

2.3 लेखांकन मान्यताएँ

प्रथम पाठ व्यावसायिक लेन-देनो की प्रकृति को दर्शाता है। ये प्रकृति से मौद्रिक हैं। इसका अर्थ यह है कि समस्त लेन-देन जिनकी मुद्रा में गणना की जा सकती है लेखे योग्य घटनाएँ है। तथा इसीलिए, ऐसे लेन-देन जिनकी गणना मुद्रा में नही की जा सकती, उन्हें कहीं भी व्यापार की लेखा पुस्तकों मे नहीं लिखा जाता है। इसी प्रकार स्वामी के व्यक्तिगत लेन-देन कही भी लेखा पुस्तकों में नहीं लिखे जाते हैं। उदाहरणार्थ अक्षय, जो एक कपड़े का व्यापारी है, अपने कुटुम्ब के साथ पिकनिक पर जाता है तथा 10.000 रूपये वहाँ व्यय करता हैं। क्योंकि यह घटना व्यापार की स्थिति को प्रभावित नहीं करती, इसीलिए इसे व्यापार की पुस्तकों मे नहीं लिखा जायेगा। कोई भी व्यक्ति जो लेन-देनों का लेखा करता है, वह इनको दिया हुआ सत्य स्वीकार करता है। अतः लेखाकंन मान्यताओं को इस तरह परिभाषित किया जा सकता हैं।

"आधारभूत स्वंयसिद्धियाँ (Postulates) अथवा मान्यताएँ (Assumptions) जो वास्तव में लेखा करने की पद्धति का आधार निर्मित करती हैं"

ये मान्यताएँ व्यावसायिक लेन-देनों का लेखा करते समय जो कठिनाईयाँ उत्पन्न होती है उन्हें हल करने मे सहायक होती हैं। ये तर्क (reason) से विकसित की गई हैं तथा अनुभवो पर आधारित होती हैं। ये मान्यताएं सभी के द्वारा सत्य विवरणों के रूप में मानी जाती हैं।

ये मान्यताएँ निम्न हैं :

(i) व्यापार-अस्तित्व की मान्यता

(ii) मुद्रा-मापन की मान्यता

(iii) चालू-व्यापार की मान्यता

(iv) अवधि की मान्यता

अब हम प्रत्येक के बारे में विस्तार से पढ़ेंगें :

(i) **व्यापार-अस्तित्व की मान्यता** : क्योंकि आप व्यावसायिक लेन-देनों के अर्थ से भली-भांति परिचित है, इसीलिए हमें व्यावसायिक लेन-देनों के कुछ और उदाहरणों से आरम्भ करना चाहिये।

उदाहरण 1

(i) एक नया व्यवसाय आरम्भ करने के लिए मोहिनी पूंजी के रूप में 2,00,000 रूपये लाती है।

(ii) वह 1,00,000 रूपये से नकद माल खरीदती है।

(iii) वह 1,50,000 रूपये में नकद माल बेचती है।

(iv) वह दुकान का किराया 3,000 रूपये देती है।

(v) वह श्याम से 20,000 रूपये का उधार माल खरीदती है।

(vi) वह पूर्णिमा को 30,000 रूपये का उधार माल बेचती है।

(vii) वह रायल फर्नीचर हाऊस से 15,000 रूपये का उधार फर्नीचर खरीदती है।

(viii) वह अपने निजि प्रयोग के लिए व्यापार में से 2,000 रुपये निकालती है।

मोहिनी व्यापार की स्वामिनी है। उसने पूँजी लगाई है तथा इसके सभी कार्यों को करती है। यदि आप इन लेन-देनों को गौर से पढ़ें, तो आपको पता चलेगा कि मोहिनी, श्याम, पूर्णिमा तथा रायल फर्नीचर हाऊस से पृथक (भिन्न) है (क्योंकि श्याम तथा पूर्णिमा अलग-अलग व्यक्ति हैं तथा रायल फर्नीचर हाऊस एक पृथक व्यवसाय है)। लेखाकंन में यही अलगाव (भिन्नता) व्यापार तथा इसके स्वामी (स्वामियो) मे भी मानी जाता है। लेखाकंन व्यवसाय तथा उस व्यक्ति (व्यक्तियों) को, जो इसके स्वामी हैं, भिन्न मानता है, तभी इस प्रकार के तथ्यों के लेन-देनों का लेखा सम्भव हो पाता है। लेन-देन सख्ंया (i) तथा (vii), यानि मोहिनी 2,00,000 रूपये पूंजी के लगाकर एक नया व्यापार आरम्भ करती है तथा 2,000 रूपये व्यापार मे से अपने निजी व्यय के लिए निकालती है, दूसरे लेन-देनों की तरह व्यावसायिक लेन-देन हैं, इसीलिए इनका भी व्यावसायिक पुस्तकों में लेखा किया जाता है।

आइये एक और उदाहरण ले :

उदाहरण 2

हरी की अभिलाषा थी कि वह एक हेयर ड्रेसिंग सैलून आरम्भ करे। हाल में उसे अपनी जायदाद के एक भाग के बेचने से 3,00,000 रूपये प्राप्त हुए हैं। तदानुसार, उसने सारे प्रबन्ध किये तथा 'न्यूवे हेयर ड्रेसिंग' नाम से एक सैलून आरम्भ की। इस नये व्यापार के लिए उसने 3,00,000 रूपये में से 2,00,000 रूपये पूंजी के बतौर लगाये।

यह उदाहरण यह दर्शाता है कि उसने 2,00,000 रूपये व्यावसायिक क्रियाओं के लिए अलग रखे शेष 1,00,000 रूपये वह अपने व्यक्तिगत या अन्य क्रियाओं में खर्च कर सकता है। यह पृथकता लेखाकार को 2,00,000 रू. के व्यावसायिक लेन-देन का लेखा करने में सहायता देता है। इस भिन्नता के बग़ैर, व्यापार के कार्य स्वामी के प्राइवेट कार्यों में मिश्रित हो जायेगे तथा व्यापार की सही हालत का पता नही मिल पायेगा। इन उदाहरणों से, यह कहा जा सकता है कि लेखांकन व्यापार तथा इसके स्वामी को अलग-अलग या भिन्न मानता है। यही अन्तर व्यापार

तथा इसके स्वामी के बीच हुए प्रत्येक लेन-देन को व्यावसायिक लेन-देन की भांति लेखा करने का आधार है। यही **'व्यापार के अस्तित्व की मान्यता'** है। इसे हम इस प्रकार परिभाषित कर सकते है **"लेखाकंन का वह स्वीकृत तथ्य या स्वयंसिद्धि (Postulate) जो व्यापार तथा उस व्यक्ति (व्यक्तियों) को जो इसका स्वामी है भिन्न मानता है, व्यापार-अस्तित्व की मान्यता है"।**

यह लेखाकारों को, स्वामी के द्वारा दिये गये रूपये को व्यवसाय के देयताओं की भांति मानने में सहायक होता है।

महत्वः

निम्न से व्यापार अस्तित्व की मान्यता के महत्व का पता चलता हैः

(i) यह मान्यता व्यापार की सही स्थिति के पता लगाने में सहायता देती है।

(ii) यह लेखाकरों को स्वामी के व्यक्तिगत लेन-देनों का लेखा करने में मार्गदर्शन करती है।

(iii) यह लेखाकंन के उत्तरदायित्वों का वर्णन करती है।

(iv) यह व्यापारिक दृष्टि से व्यावसायिक लेन-देनों के लेखा करने एवं सूचना देने के कार्य को आसान बनाती है।

(v) यह लेखाकंन संकल्पनाओं, परिपाटियों के लिए आधार का कार्य करती हैं।

पाठगत प्रश्न 2.1

रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्दों से भरिये :

(i) __________ व्यापार तथा इसके स्वामी के बीच हुए लेन-देनों को व्यावसायिक लेन-देनों की भांति लेखा करने का आधार है।

(ii) व्यापार अस्तित्व की मान्यता लेखाकारो को स्वामी के व्यक्तिगत लेन-देनों को व्यापारिक __________ की भांति लेखा करने में मार्गदर्शन करती है।

(iii) व्यापार-अस्तित्व मान्यता __________ प्रकार के व्यवसायिक संस्थाओं में लागू होती है।

(iv) व्यापार-अस्तित्व मान्यता के अनुसार, व्यापार के स्वामी के व्यक्तिगत लेन-देनों का लेखा व्यापार की पुस्तकों में __________ होता है।

मुद्रा-मापन मान्यता :

माना कि एक व्यापारी जूता बनाता है। उसे चावल की आवश्यकता है। अब वह ऐसे व्यक्ति की तलाश में होगा जिसके पास चावल है तथा चावल के बदले जूतों में रुचि रखता है। माल का माल से विनिमय बारटर (अदला बदली का) व्यापार कहलाता है। अदला-बदली के व्यापार में

कई प्रकार की समस्याएं आती हैं जैसे सही ग्राहक ढूढ़ना, सौदा करना इत्यादि। मुद्रा ने अदला-बदली के व्यापार की अधिकतर समस्याओं का समाधान किया है। धीरे-धीरे मुद्रा व्यापार का माध्यम स्वीकार हो गया। अदला-बदली के लेन-देनों का व्यापार की पुस्तकों में लेखा नहीं किया जाता।

आइयें एक दूसरा उदाहरण लें। किसी एक निश्चित दिन को एक व्यापारिक संस्थान ने एक कार्यालय मेज़, 60 मीटर कपड़ा, तथा 10 लिटर पैट्रोल खरीदा। इन सभी वस्तुओं को लेखाकार कैसे लिखेगा? कार्यालय मेज़, मीटर तथा लीटर को कैसे जोड़ा जायेगा? इन सभी वस्तुओं को मापनें की इकाई भिन्न है। यदि इन्हें मापने की साधारण इकाई में लाया जाए, तो इनका लेखा तथा सूचना देना आसान हो जायेगा। ऐसे मुद्रा को समस्त व्यापारिक लेन-देनों के मापने के समान इकाई के बतौर स्वीकार किया है। यही कारण है कि व्यापारिक लेन-देन प्रकृति से मौद्रिक होतें हैं। इसीलिए केवल वे ही लेन-देन जो मुद्रा में मापे जा सकते हैं अपने मौद्रिक मूल्य के साथ व्यावसाय की पुस्तकों में लिखे जाते हैं। दूसरे शब्दों में यदि कोई लेन-देन मुद्रा में नहीं व्यक्त किया जा सकता तो वह लेखा पुस्तकों में नहीं लिखा जायेगा। इसे **मुद्रा-मापन मान्यता** कहते हैं।

लेन-देनों को उनके मुद्रा मूल्य पर लेखा करने के निम्न लाभ हैं-

(i) **मापन की सार्वभौमिक इकाई :** बहुत समय से, मुद्रा को व्यापारिक लेन-देनों के माध्य के बतौर स्वीकार किया गया है। यह समस्त व्यापारिक लेन-देनों के मापन की एक समान तथा सार्वभौमिक इकाई के बतौर प्रयोग होती है।

(iii) **लेखा करने के लिए मार्गदर्शक :** मुद्रा-मापन मान्यता लेखाकारों को क्या लेखा करना चाहिये तथा क्या नहीं इस बात का मार्गदर्शन कराती है।

(iii) **लेखा करने में सरलता लाता है :** मुद्रा में व्यक्त लेन-देनों को आसानी से जोड़ा, घटाया जा सकता है। यह व्यापारिक लेन-देनों को समरूपता से लिखने मे सहायता करता है।

(iv) **वित्तीय विवरणों की उपयोगिता :** व्यक्ति लेन-देनों को आसानी से समझ सकते है यदि इन्हें मुद्रा में व्यक्त किया जाता है।

(v) **तुलना करना आसान हो जाता है :** सूचनाओं को प्रयोग करने वाला व्यक्ति एक मेज को 60 मीटर कपड़े से तुलना नहीं कर सकता परन्तु 1,000 रूपये की 500 रूपये से आसानी से तुलना कर सकता है। इस प्रकार मुद्रा व्यापारिक कार्य की तुलना को आसान करता है।

पाठगत प्रश्न 2.2

उस सूचना के सामने जो लेखा पुस्तकों में लिखी जानी चाहिए (√) का चिन्ह तथा उन सूचनाओ के सामने जो लेखा पुस्तकों मे नही लिखी जानी चाहिए (×) का चिन्ह लगाइये :

(i) वित्तीय प्रबन्धक का स्वास्थ्य।

(ii) 1,00,000 रूपये मूल्य की मशीनरी खरीदी।

(iii) मज़दूर तथा प्रबन्धको के अच्छे सम्बन्ध।

(iv) 700 रूपये टेलीफोन बिल के भुगतान किये।

(v) 1,000 रूपये मूल्य का माल दान में दिया।

(vi) कार्यालय समय में बिजली की कटौती।

(vii) कच्चे माल की पूर्ति मे विलम्ब।

(viii) कपड़े की पैट्रोल से अदला बदली।

(ix) उधार माल खरीदा।

(x) स्वामी ने रोकड़ निकाला।

2.5 चालू-व्यापार की मान्यता

एक व्यापारी विभिन्न वस्तुएँ खरीदता है। कुछ वस्तुएँ (जिन्हें माल के नाम से पुकारा जाता है) बेचने के लिए खरीदीं। कुछ वस्तुए न बेचने के लिए खरीदीं। ऐसी वस्तुएँ का प्रयोग लगातार व्यापारिक क्रियाओं के करने में होता है। आइये एक उदाहरण लें। किसी स्टेश्नरी की दुकान में, आपने किताबे, नोट बुक (कॉपिया) तथा दूसरी स्टेश्नरी की वस्तुएँ देखी होगी। स्टेश्नरी दुकानदार इन वस्तुओं को उनके बाज़ार मूल्य पर बेचता है। परन्तु, इनके अलावा वहाँ कुछ अन्य वस्तुएँ जैसे अलमारी, मेज़, कुर्सी, पंखे इत्यादि भी हैं। ये वस्तुए बिक्री के लिए नहीं हैं। यदि आप उसी दुकान पर बार-बार जायें, आप देखेगें कि ये वस्तुएँ बहुत लम्बे समय से वहाँ रखी होती हैं। ऐसी वस्तुओं को **स्थायी सम्पत्तियाँ** कहते हैं। लेखा करते समय, प्रत्येक व्यापारी स्थायी सम्पत्तियों को उनके क्रय मूल्य पर लिखता है न कि बाज़ार मूल्य पर। क्यों? क्योंकि वह मान लेता है कि वह इस सम्पत्तियों की सहायता से बहुत समय तक अपना व्यापार चालू रख सकता है। लेखाकंन में यह **'चालू-व्यापार मान्यता'** कहलाती हैं। माना कि एक व्यापारिक संस्थान माल के विज्ञापन पर 5,00,000 रूपये व्यय करने की योजना बनाता है। नीचे दी गई किन स्थितियो में इतनी बड़ी राशि का व्यय करना उत्तम होगा।

(i) जब व्यापार में लेन देनों की संख्या सीमित हो,

(ii) जब व्यापार का जीवनकाल छोटा हो- यानि यह 3 से 4 माह के अन्दर बन्द करना हो,

(iii) जब व्यापार का जीवनकाल लम्बा हो तथा बढ़ौतरी के अच्छे आसार हो?

पहली स्थिति में, क्योंकि व्यापार में लेन-देनों की संख्या सीमित है, यह बुद्धिमता नही है कि इतनी बड़ी राशि व्यय की जाए। इसी प्रकार दूसरी स्थिति में, व्यापार का जीवन काल छोटा है यानि यह अपनी क्रियाएं जल्दी ही बंद करने वाला है। इसीलिए यह ठीक नहीं हैं कि इतनी बड़ी राशि जबकि व्यापार का जीवन यकीनन ही छोटा है, व्यय की जाये। दूसरा अभिप्राय यह है कि व्यापार मुद्रा की एक बड़ी राशि केवल यह मानकर कि इसकी क्रियाएँ बहुत लम्बे समय तक चलती रहेगी तथा इस लम्बे समय के अन्दर ऐसे व्ययों का लाभ मिलता रहेगा, व्यय करता है या करना चाहिए। इस मान्यता को इस प्रकार कहा जा सकता है : **"यह लेखाकंन मान्यता बताती है कि व्यापार का जीवन अनिश्चित है** जब तक कि निकट भविष्य में इसको बेचा व बंद न किया जाए।

निम्न बातें चालू-व्यापार मान्यता की आवश्यकता तथा महत्वता को दर्शाती हैं :

(i) इसी मान्यता के आधार पर वित्तीय विवरण बनाये जाते हैं।

(iii) यह बाह्य लोगों को इस बात का यकीन दिलाता है कि व्यापारिक क्रियाएँ अनिश्चित काल तक चलती रहेगी।

(iii) व्यापार के चलते रहने को ध्यान में रखते हुए, स्थाई सम्पत्तियों के बाज़ार मूल्य में उतराव-चढ़ाव को ध्यान में नहीं रखा जाता।

(iv) इस मान्यता की ही वजह से किसी व्यापार के भविष्य में लाभ कमाने की क्षमता का अवलोकन किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 2.3

कोष्ठक मे दिये गये उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थान भरिये :

(i) चालू व्यापार मान्यता बताती है कि प्रत्येक व्यापार अपने कार्य-कलापों ____________ को तक चलाता रहेगा। (निश्चित काल, अनिश्चित काल, अल्प काल)

(ii) स्थायी सम्पत्तियों को उनके ____________ पर दर्शाया जाता है। (लागत मूल्य, बिक्री मूल्य, लिस्ट मूल्य)

(iii) यह मान्यता कि व्यापारिक संस्थान को निकट भविष्य मे नहीं बेचा जायेगा अथवा बन्द नहीं किया जायेगा ____________ कहलाता है। (अस्तित्व मान्यता, चालू-व्यापार मान्यता, मुद्रा-मापन मान्यता)

(iv) चालू-व्यापार मान्यता के आधार पर, एक व्यापार अपना ____________ तैयार करता है। (बैंक विवरण, नकद विवरण, वित्तीय विवरण)

2.6 अवधि की मान्यता

अवधि-मान्यता का अर्थ बताने से पहले, हम निम्न उदाहरण पर विचार करे। माना कि आप अपना व्यापार चला रहे हैं। आप जानते हैं कि व्यापार का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है।

आपको यह भी पता है कि लेखाकंन व्यापारिक लाभ का निर्धारण करता है। यदि आप अपने व्यापार के लाभ का पता लगाना चाहते हैं तो निम्न स्थितियों में से आप किसी स्थिति को अपने व्यापार के लाभ का पता लगाने के लिए पसन्द करेगें ?

(i) क्योकि चालू-व्यापार मान्यता यह मानती है कि व्यापारिक क्रियाएँ अनिश्चित काल तक चलती रहेगी, क्या आप ऐसे अनिश्चित काल के समाप्त होने का इंतजार करेगें तथा केवल इस अनिश्चित काल के समाप्त होने पर ही अपने व्यापारिक लाभ का पता लगायेगे ?

(ii) आप चालू-व्यापार मतान्यता का अनुसरण करेगें। परन्तु, व्यापार के लाभ का पता लगाने के लिए, निश्चित छोटे-छोटे कालों में बाँट देगें तथा इस छोटे काल के समाप्त होने पर आप अपने व्यापार के लाभ की गणना क्रम से करेगें।

अब इन दोनों स्थितियों में, दूसरी स्थिति कहीं अच्छी है क्योंकि दूसरी स्थिति बहुत प्रकार के व्यापारिक निर्णय लेने मे सहायता करती है जैसे –

(i) क्या व्यापार को चालू रखना उचित है ?

(ii) यदि लाभ उत्साहवर्द्धक हैं तो व्यापार का विस्तार किया जाये अथवा नही ?

(iii) यदि लाभ आशा से कम है तो समयानुसार क्या सुधारात्मक कार्य किये जाए ताकि अपेक्षित लाभ प्राप्त किये जा सकें ?

लाभ से अन्ततः अभिप्राय उस आय से है जो व्यापार के अन्त में प्राप्त होती है। प्राप्त लाभ का एक निश्चित अवधि के पश्चात् निर्धारण बहुत महत्वपूर्ण है। इसीलिए एक निश्चित अवधि के पश्चात् लाभ निर्धारण की आवश्यकता भी है। अतः लेखा बहियों में लेन-देनों का लेखा इस मान्यता पर किया जाता है कि उन लेन-देनों के फलस्वरूप एक निश्चित अवधि के पश्चात् लाभ निर्धारण किया जा सके। लेखाकंन मे इसे ही **'अवधि की मान्यता'** कहा जाता है। अवधि मान्यता में व्यापार के अनिश्चित जीवन को भागों मे बाँट दिया जाता है। इन भागों को लेखाकंन काल (लेखा-अवधि) कहा जाता है। ये एक वर्ष, आधा वर्ष, मासिक इत्यादि के हो सकते हैं। सामान्यता एक लेखा अवधि एक वर्ष की ली जाती है। यदि लेखा वर्ष 1 जनवरी से आरम्भ तथा 31 दिसम्बर को समाप्त होता है, तब लेखा-वर्ष कैलेन्डर वर्ष से मिलता है। यदि लेखा-वर्ष 1 अप्रैल से आरम्भ होता है तथा 31 मार्च को समाप्त होता है तो लेखा वर्ष वित्तीय वर्ष से मिलता है। अवधि-मान्यता के अनुसार लेखा बहियों में लेन-देनों का लेखा एक निश्चित अवधि को ध्यान मे रखकर किया जाता है। एक निश्चित अवधि में खरीदी एवं बेची गई वस्तुओं का, भुगतान किये गये किराये का लेखा उस अवधि से सम्बन्धित लेखों के अन्तर्गत ही किया जाता है। अवधि की मान्यतानुसार एक निश्चित लेखा-अवधि (साधारणतया एक वर्ष) के व्यय व आगम की अवधि विशेष के अन्तर्गत माना जाता है। इस प्रकार प्रतिवर्ष लाभ निर्धारित किए जाते हैं। लेखा अवधि की मान्यता इतनी महत्वपूर्ण है कि सरकार भी व्यापार की एक वर्ष की आय पर कर लेती है। व्यापार से लेन-देन करने वाले बाह्य पक्ष जैसे बैंक, वित्तीय संस्थान आदि भी व्यापार के एक निश्चित अवधि के लाभ जानना चाहते है। यह तभी सम्भव है जब किये गये लेखों से लाभ की गणना अवधि की मान्यता के आधार पर की जाये।

पाठगत प्रश्न : 2.4

1. उपयुक्त शब्दो से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

   (i) एक निश्चित अवधि को ध्यान में रखते हुए लेखा-पुस्तकों मे लेखा करना ____________ मान्यता कहलाता है।

   (ii) एक निश्चित अवधि में लाभ का निर्धारण किसी व्यापारिक इकाई की ____________ जानने में सहायता करता है।

   (iii) सामान्य रूप से मानी गई लेखा अवधि ____________ है।

   (iv) अवधि की मान्यता के अनुसार आगम एवं व्यय एक ____________ अवधि से सम्बन्धित होते है।

2. दिये गये तथ्यो के सामने लेखाकंन मान्यता का नाम लिखिये :

   (i) केवल मौद्रिक लेन-देन ही लेखा पुस्तकों में लिखे जाते हैं

   (ii) लेन-देन एक निश्चित अवधि, सामान्यता एक वर्ष के लिए किए जाते है

   (iii) व्यापार का उसके स्वामी से पृथक अस्तित्व है

   (iv) व्यापार एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है

2.7 आपने क्या सीखा है

(i) लेखाकंन मान्यताएं आधारभूत स्वयसिद्धिंया (Postulates) हैं जो वास्तव में लेखा करने की पद्धति का आधार निर्मित करती है।

(ii) चार महत्वपूर्ण लेखांकन मान्यताएँ-व्यापार-अस्तित्व, मुद्रा-मापन, चालू-व्यापार तथा अवधि की मान्यताएं हैं

(iii) लेखाकंन व्यापार तथा इसके स्वामी को अलग तथा भिन्न मानता है। इसे व्यापार के अस्तित्व की मान्यता कहते है।

(iv) वे लेन-देन जो मुद्रा में मापे जा सकते हैं अपने मौद्रिक मूल्य के साथ लेखा पुस्तकों में लिखे जाते हैं।

(v) चालू-व्यापार की मान्यता यह मानती है कि व्यापार का जीवन अनिश्चित है जब तक कि निकट भविष्य में इसे बेचा अथवा बंद न किया जाए।

(vi) लेखा-पुसतकों में लेन-देनों का लेखा इस मान्यता पर किया जाता है कि उन लेन-देनों के फलस्वरूप एक निश्चित अवधि के पश्चात् लाभ निर्धारण किया जा सके। लेखाकंन मे इसे ही "अवधि की मान्यता" कहा जाता है।

2.8 पाठान्त प्रश्न

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य मे दीजिए :

   (i) चार लेखाकंन मान्यताओं के नाम लिखिये।

   (ii) लेखाकंन मान्यता का अर्थ लिखिये।

2. व्यापार-अस्तित्व मान्यता का अर्थ तथा इसके महत्व के दो विन्दू दीजिए। (30 से 50 शब्दों में)

3. मुद्रा-मापन मान्यता का अर्थ तथा महत्व बताइये (लगभग 50 शब्दों में)

4. चालू-व्यापार मान्यता की आवश्यकता तथा महत्वता के कोई चार बिन्दू बताइये।

5. लेखाकंन मान्यताओं की आवश्यकता को उदाहरण सहित समझाइये।

2.9 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 (i) व्यापार अस्तित्व की मान्यता

(ii) देयता

(iii) प्रत्येक

(iv) नहीं है।

2.2 (i) (×) (ii) (√) (iii) (×) (iv) (√) (v) (×)

(vii) (×) (viii) (×) (ix) (√) (x) (√)

2.3 (i) अनिश्चिता से

(ii) लागत मूल्य

(iii) चालू व्यापार की मान्यता

(iv) वित्तीय विवरण

2.4 1. (i) अवधि (ii) निष्पादन (अनुपालन)

(iii) एक वर्ष (iv) निश्चित

2. (i) मुद्रा-मापन मान्यता (ii) अवधि की मान्यता

(iiii) व्यापार के अस्तित्व की मान्यता (iv) चालू-व्यापार की मान्यता।